प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दुस्तान कॉलेज में मनाया गया महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का 131 वाँ जन्म दिन

विगत दिवस शारदा ग्रुप के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलाजी के गणित विभाग द्वारा राष्ट्रीय गणित दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें महान गणितज्ञ श्री रामानुजन को उनके जन्म दिवस के मौके पर उनके गणित के क्षेत्र में किये गये अभूतपूर्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय योगदान के लिए याद किया गया।

गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरेन्द्र सिंह चौहान ने श्री रामानुजन के जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि उनका जन्म 22 दिसम्बर 1887 को कोयंबटूर के एक गॉव ईरोड में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर तथा माता का नाम श्रीमती कोमलताम्मल था। इनका जीवन बहुत ही गरीबी व परेशानी में व्यतीत हुआ परन्तु इसके बाबजूद रामानुजन ने अपने जीवन में बहुत गणितीय सूत्र और प्रमेय दिये। जिन पर कालान्तर में अनेक शोध हुए और तमाम अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध पत्र लिखे गये। उन्होंने बताया कि रामानुजन जी के स्वप्न में भी गणितीय समीकण ईश्वरीय वरदान की तरह उतरती थी। उन्होंने 32 वर्ष की आयु में 3900 गणितीय प्रमेद दी। उन्होंने मैजिकल नम्बर 1729 के बारे में बताया जिसे हार्डी रामानुजन नम्बर कहा जाता है।

संस्थान के निदेशक डॉ. राजीव कुमार उपाध्याय ने इस महान गणितज्ञ को याद करते हुए कहा कि बचपन में श्री रामानुजन गणित में बहुत अच्छे थे परन्तु पारम्परिक शिक्षा में कभी भी उनका मन नहीं लगा। मात्र दस वर्ष की आयु में आप पूरे जिले में सर्वाधिक अंक लेकर आये थे। रामनुजन को हमेशा प्रश्न करने की आदत थी, आप कक्षा में भी

अध्यापकों से हमेशा प्रश्न करते रहते थे। उन्होंने स्कूल के समय में ही कॉलेज स्तर के गणित को पढ़ लिया था परन्तु गणित में रुचि होने के कारण ग्यारहवीं की कक्षा में गणित को छोड़ कर सभी विषयों में फेल हो गये थे। आगे चलकर उन्होंने इंग्लैण्ड के प्रोफेसर हार्डी के साथ मिल कर उच्चकोटि के शोधपत्र भी प्रकाशित किये। रामानुजन ने मॉक थीटा फंक्शन पर एक उच्च स्तरीय शोधपत्र लिखा जिसका उपयोग गणित ही नहीं बल्कि चिकित्साविज्ञान में कैंसर को समझने के लिए भी किया जाता है।

गणित विभाग सहायक प्रवक्ता डॉ. गिर्राज कुमार ने अपने व्याख्यान में श्री रामानुजन के जीवन से जुड़े रोचक तथ्यों पर प्रकाश डाला। रामानुजन ने गरीबी में रहते हुए भी गणित के प्रति अपने प्रेम को कभी कम नहीं होने दिया। रामानुजन के गणित प्रेम के कारण उन्होंने इंग्लैण्ड में रॉयल सोसाइटी का फेलो नामित किया गया जोकि उस समय किसी अश्वेत व्यक्ति को रॉयल सोसाइटी की सदस्यता का मिलना बहुत बड़ी बात थी। रामानुजन ट्रिनीटी कॉलेज के फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय भी थे। उन्होंने बताया कि 26 अप्रैल 1920 में मात्र 33 वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास हो गया।

कार्यक्रम का संचालन विभाग की ही असिस्टेंट प्रोफेसर डा मुक्ति पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम के अंत में गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरेन्द्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजीव कुमार तिवारी, संस्थान के श्री मुनीष खन्ना, श्री शंकर ठवकर, डॉ. रिचा कपूर, श्री अनुराग वाजपेयी, श्री प्रमोद कुमार, श्री संजय सिंह, श्री अजय पाराशर, डॉ. एम. पी. सिंह, श्री सलीम अहमद एवं संस्थान के समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारी मौजूद रहे।